

IGNOU.
Based

NEERAJ®

E.P.S.-7

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

(International Relations)

By: Mukesh Magon, M.B.A., P.G.D.B., M.I.R.

Question Bank cum Chapterwise Reference Book
Including Many Solved Question Papers



NEERAJ
PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411,
23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ` 200/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006

E-mail: info@neerajignoubooks.com

Website: www.neerajignoubooks.com

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: *Competent Computers*

Printed at: *Novelty Printer*

Notes:

1. For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.
3. The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.
7. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
8. Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.
9. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
10. Subject to Delhi Jurisdiction only.

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website www.neerajignoubooks.com. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website www.neerajignoubooks.com.

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: info@neerajignoubooks.com Website: www.neerajignoubooks.com

CONTENTS

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध (INTERNATIONAL RELATIONS)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

<i>Question Paper—June, 2019 (Solved)</i>	1-4
<i>Question Paper—December, 2018 (Solved)</i>	1-6
<i>Question Paper—June, 2018 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—December, 2017 (Solved)</i>	1-5
<i>Question Paper—June, 2017 (Solved)</i>	1-3
<i>Question Paper—December, 2016 (Solved)</i>	1-4
<i>Question Paper—June, 2016 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—December, 2015 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—June, 2015 (Solved)</i>	1-3
<i>Question Paper—December, 2014 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—June, 2014 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—December, 2013 (Solved)</i>	1-4
<i>Question Paper—June, 2013 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—December, 2012 (Solved)</i>	1-6
<i>Question Paper—June, 2012 (Solved)</i>	1
<i>Question Paper—June, 2011 (Solved)</i>	1-2
<i>Question Paper—June, 2010 (Solved)</i>	1-2
<i>Sample Question Paper—1 (Solved)</i>	1-8
<i>Sample Question Paper—2 (Solved)</i>	1-8
<i>Sample Question Paper—3 (Solved)</i>	1-6
<i>Sample Question Paper—4 (Solved)</i>	1-5

<i>S.No.</i>	<i>Chapterwise Reference Book</i>	<i>Page</i>
1.	अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों?	1
2.	साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, फासीवाद और क्रांति.....	5
3.	राज्य व्यवस्था, शक्ति, राष्ट्रहित और राष्ट्रीय सुरक्षा	8

<i>S.No.</i>	<i>Chapter</i>	<i>Page</i>
4.	अंतः युद्धकाल.....	11
5.	बोल्शेविक क्रांति एवं उसका प्रभाव.....	14
6.	द्वितीय विश्व युद्ध : कारण और परिणाम	16
7.	शीत-युद्ध : अभिप्राय, प्रतिमान और आयाम	20
8.	गुटनिरपेक्षता	23
9.	हथियारों की दौड़ और नाभिकीय खतरा	26
10.	निरस्त्रीकरण और शांति आंदोलन.....	29
11.	उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का स्वरूप	31
12.	तीसरी दुनिया के राज्यों की विशेषताएँ.....	33
13.	खाड़ी युद्ध.....	35
14.	समाजवादी खेमे का विखंडन.....	37
15.	बदलती विश्व-व्यवस्था संबंधी दृष्टिकोण	40
16.	संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था का पुनर्गठन	43
17.	अर्थव्यवस्था का भूमंडलीकरण, आई.बी.आर.डी., आई.एम.एफ.डब्ल्यू.टी.ओ.	46
18.	क्षेत्रीय संगठन	49
19.	पर्यावरण और सतत् मानव विकास	53
20.	मानव अधिकार एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति	56
21.	जातीय राष्ट्रीय संघर्ष के प्रतिमान और आयाम.....	58
22.	अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद	61
23.	संचार प्रौद्योगिकी में क्रांति	63

**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June - 2019)

(Solved)

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

समय : 3 घण्टे]

[अधिकतम अंक : 100

- नोट : (i) खण्ड I—किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(ii) खण्ड II—किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(iii) खण्ड III—किन्हीं दो भागों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—I

निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. अंतर्राष्ट्रीय संबंध के अध्ययन के क्या दृष्टिकोण हैं?

उत्तर—संदर्भ—देखें सैम्पल प्रश्न पत्र-1, पृष्ठ-1, प्रश्न 1, अध्याय-1, पृष्ठ-2, प्रश्न 4

प्रश्न 2. द्विध्रुवीय व्यवस्था क्या है? विस्तार से बताइए।

उत्तर—अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में मुख्यतः तीन एकध्रुवीयता, द्विध्रुवीयता तथा बहुध्रुवीयता का प्रतिमान है।

दूसरा विश्वयुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में बहुत गहरे तथा व्यापक परिवर्तनों का कारण बना। इससे अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में परंपरागत शक्ति संरचना समाप्त हो गई तथा एक नई शक्ति संरचना बन गई, जो शान्ति सन्धियों के तत्काल बाद ही द्विध्रुवीय बन गई। अमरीका तथा सोवियत रूस के रूप में दो शक्तिशाली प्रतिपक्षों का उदय हुआ, जो जमीन से स्टार वार तक जा पहुंचे। सोवियत रूस तथा संयुक्त राज्य अमरीका का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हस्तक्षेप प्रारंभ हो गया और इस पारस्परिक प्रतिस्पर्धा से विश्व स्वतः द्विध्रुवीयता की स्थिति में आ गया। दुनिया में राज्य एवं राज्यों के बीच राजनीति-आर्थिक शक्ति-सन्तुलन का निर्माण होने लगा। शस्त्रीकरण की होड़ शुरू हो गयी।

द्विध्रुवीय व्यवस्था का अर्थ है—वह व्यवस्था जिसमें दो महाशक्तियों का अस्तित्व होता है तथा जिनकी क्षमताएं प्रायः तुलनात्मक होती हैं। इनकी शक्ति व्यवस्था के अन्दर प्रत्येक का शीर्ष-शक्ति ढांचा (Vestical power structure) होता है जो एक-दूसरे के शक्ति ढांचे के प्रतिकूल होता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसमें दो प्रतिपक्षी राज्यों के ब्लाक होते हैं तथा जिसमें प्रत्येक दूसरे को शत्रु समझता है, प्रत्येक दूसरे को अपनी सुरक्षा के लिए खतरा समझता है।

वास्तव में यह शक्ति-सन्तुलन की वह दशा है, जब दो बराबर शक्ति वाले राष्ट्र सन्तुलनकर्ता की भूमिका अदा करते हैं तथा सन्तुलन की प्रक्रिया सैनिक शक्ति के आधार पर चलती है। उदाहरणतः शीत युद्ध काल में समानान्तर सैनिक शक्ति वाले तत्कालीन सोवियत संघ तथा संयुक्त राज्य अमेरिका जिन्होंने लगभग चालीस वर्षों तक द्विध्रुवीय व्यवस्था में स्थाई स्तम्भ के रूप में विश्व को सन्तुलन देने का प्रयास किया और इस काल में दोनों परस्पर सन्धियों में व्यस्त रहे। इन सन्धियों की लोकप्रियता तथा इन महाशक्तियों के दूसरे राज्यों पर नियन्त्रण का ज्ञान इस तथ्य से हो सकता है कि जब संयुक्त राष्ट्र की सदस्य संख्या 59 थी, तो इन दोनों ब्लाकों में 90 राज्य सम्मिलित थे।

ये सभी लक्षण परमाणु विध्वंस के खतरे में घिरी मानवता के तथा महाशक्तियों की दया पर निर्भर राष्ट्रों दोनों के लिए अच्छे नहीं थे। सोवियत संघ ने अपने आश्रित राज्यों के समीप पर्याप्त सैनिक दल कायम कर रखे थे, ताकि वे उसके शासन को मानते रहे, वहीं अमरीका ने सूक्ष्म दबावों का प्रयोग किया था। अमरीकी सन्धियां श्रेणीबद्ध कम थीं, फिर भी स्पष्ट रूप से अमरीका के इर्द-गिर्द केन्द्रित थीं।

प्रश्न 3. अंतर्राष्ट्रीय संबंध पर प्रथम विश्व युद्ध के क्या प्रभाव थे? विस्तार से बताइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-4, पृष्ठ-12, प्रश्न 5, पृष्ठ-13, प्रश्न 6, प्रश्न 7, पृष्ठ-12, प्रश्न 4

प्रश्न 4. Great Depression के कारणों एवं प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—इतिहास में महामंदी या भीषण मन्दी (द ग्रेट डिप्रेशन) (1929-1939) के नाम से जानी जाने वाली यह घटना एक विश्वव्यापी आर्थिक मंदी थी। यह सन 1929 के लगभग शुरू हुई और 1939-40 तक जारी रही। विश्व के आधुनिक इतिहास में यह

सबसे बड़ी और सर्वाधिक महत्त्व की मंदी थी। इस घटना ने पूरी दुनिया में ऐसा कहर मचाया था कि उससे उबरने में कई साल लग गए। उसके बड़े व्यापक आर्थिक व राजनीतिक प्रभाव हुए। इससे फासीवाद बढ़ा और अंततः द्वितीय विश्वयुद्ध की नौबत आई। हालांकि यही युद्ध दुनिया को महामंदी से निकालने का माध्यम भी बना।

यह महामंदी 1929 में अमेरिका में शुरू हुई और जल्दी ही ब्रिटेन, जर्मनी और भारत समेत दुनिया के अन्य भागों में भी फैल गई। इस समय के दौरान ज्यादातर लोग बेरोजगारी और भुखमरी का शिकार थे।

ग्रेट डिप्रेशन के कारण

1. मंदी की शुरुआत 29 अक्टूबर 1929 को अमेरिका में शेयर मार्केट के गिरने से हुई जिसकी वजह से वहां के ज्यादातर लोगों ने अपने खर्चे कम कर दिए। इससे मांग प्रभावित हुई और कई उद्योग घाटे में पड़ने शुरू हो गए। 1929 से 1932 के दौरान औद्योगिक उत्पादन की दर में 45 फीसदी तक की गिरावट आ गई थी।

2. 1930 में अमेरिका में पड़ने वाले सूखे ने आग में घी डालने का काम किया। सूखे की वजह से फसलें बर्बाद हो गईं और किसान कर्जे के बोझ तले दब गए।

3. लोग बैंकों से लिया कर्जा वापिस चुकाने में असमर्थ हो गए और जिन लोगों ने अपना पैसा बैंकों में जमा करा रखा था उन्होंने उसे निकालना शुरू कर दिया। इस वजह से लगभग 11 हजार बैंक दिवालिया होकर बंद हो गए।

ग्रेट डिप्रेशन के प्रभाव—

1. महामंदी की वजह से दुनिया में लगभग 1 करोड़ 30 लाख लोग बेरोजगार हो गए थे। नए घरों के निर्माण में 80 फीसदी तक की कमी आ गई थी, क्योंकि लोगों के पास पैसा ही नहीं था।

2. महामंदी शुरू होने के अगले 10 सालों तक दुनिया के ज्यादातर देशों में आर्थिक गतिविधियां ठप्प रहीं और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार लगभग खत्म हो गए। साल 1932 और 1933 महामंदी के सबसे बुरे साल थे।

3. एक औसतन परिवार की आमदनी में 40 फीसदी तक की कमी आ गई। लगभग 3 लाख कंपनियां बंद हो गईं।

4. उस समय केवल फ्रांस और रूस ही ऐसे देश थे जो महामंदी के प्रभाव से बच गए। फ्रांस को पहले विश्व युद्ध में हुए नुकसान के हर्जाने के रूप में जर्मनी से काफी कुछ मिला था जिसकी वजह से आर्थिक मंदी का उस पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ा।

5. रूस तानशाह स्टालिन की मजबूत आर्थिक नीतियों की वजह से वह भी आर्थिक मंदी से प्रभावित नहीं हुआ।

6. महामंदी का भारत पर बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा था। उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था और उन्होंने उसी के अनुसार व्यापार नीति बनाई थी जिससे इंग्लैंड की आर्थिकता तो बची रही, पर उसने भारत की आर्थिकता को तोड़ कर रख दिया।

7. चीजों के दाम बढ़ा दिए गए और लोगों पर तरह-तरह के टैक्स लगा दिए गए, जिससे गरीब भारतीय जनता बुरी तरह से पिस गई। सबसे बुरा हाल किसानों का था, जिन्हें अपनी फसल कम कीमत में सरकार को बेचनी पड़ती थी।

खण्ड—II

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. फासीवाद क्या है?

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-2, पृष्ठ-6, प्रश्न 4

प्रश्न 6. किसी भी एक प्रमुख क्रांति के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-5, पृष्ठ-14, प्रश्न 1, प्रश्न 3

प्रश्न 7. विदेश नीति में राष्ट्रीय हित कैसे झलकते हैं? उदाहरणों के साथ समझाइए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-3, पृष्ठ-10, प्रश्न 5

प्रश्न 8. द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् शांति प्रयासों का आकलन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-6, पृष्ठ-17, प्रश्न 3

प्रश्न 9. उपनिवेशीकरण के नकारात्मक लक्षणों और इसके प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रक्रिया थी, जो यूरोप के उन महानगरों द्वारा प्रारंभ की गई, जहाँ व्यापारिक और औद्योगिक क्रांति पहले हुई थी। ब्रिटेन के बदलते हुए सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विकास के बदलते हुए प्रतिमानों ने इसके स्वरूप तथा नीतियों में परिवर्तन किया। उपनिवेशवाद का अध्ययन उपनिवेशवादी नीति की बजाए एक ढाँचे के रूप में अच्छी तरह किया जा सकता है। अब तक उपनिवेशवाद का अध्ययन उपनिवेशवादी नीति या विचारों और व्यक्तियों के अभियान और प्रगति के रूप में किया जाता रहा है। विचार और व्यक्तित्व उपनिवेशवादी नीति को काफी प्रभावित करते रहे हैं, लेकिन उपनिवेशवाद के अध्ययन का यह समुचित आधार नहीं है क्योंकि नीति में परिवर्तन आ सकता है और ऐतिहासिक दृष्टि से शासक-विशेष की इच्छा के अनुरूप नीति में परिवर्तन आता भी रहा है। इसके विपरीत उपनिवेशवादी ढाँचे में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया और वह स्थिर रहा। इस प्रकार उपनिवेशवाद एक ऐसा ढाँचा होता है, जिसके माध्यम से किसी देश का आर्थिक (तथा इसके परिणामस्वरूप राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक) शोषण तथा उत्पीड़न सम्पन्न होता है। इस ढाँचे के

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (INTERNATIONAL RELATIONS)

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन क्यों ? विषय-क्षेत्र और दृष्टिकोण



प्रश्न 1. 'अन्तर्राष्ट्रीय संबंध' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-अन्तर्राष्ट्रीय संबंध-वर्तमान युग स्वतंत्र राष्ट्र-राज्यों का युग है, अर्थात् विभिन्न राष्ट्र-राज्य स्वतंत्र किन्तु अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इस निर्भरता के परिणामस्वरूप उनके बीच के संबंध राजनीतिक थे, फिर भी व्यापार और व्यवसाय से संबद्ध अध्ययन और ज्ञान का अनिवार्य क्षेत्र बन गए हैं। अंतर्राष्ट्रीय संबंध से तात्पर्य इन्हीं प्रभुसत्ता संपन्न राज्यों/राष्ट्र-राज्यों के बीच राजनीतिक संबंध के अध्ययन से है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंध शब्द का प्रयोग 'स्थिति' एवं 'विषय' दोनों ही रूपों में किया जा सकता है। एक 'स्थिति' के रूप में अंतर्राष्ट्रीय जीवन के तथ्यों का द्योतक है अर्थात् राजनय एवं विदेश नीति के आधार पर राज्यों के बीच संबंधों के वास्तविक व्यवहार का अध्ययन है। इसमें सहयोग, संघर्ष और युद्ध जैसे विषय-क्षेत्र शामिल हैं। राइट के अनुसार, "विद्या के रूप में अंतर्राष्ट्रीय संबंध को राज्यों के मध्य स्थापित संबंधों का एक सुव्यवस्थित तथा वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करना चाहिए।" अतः अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को संप्रभु राज्यों के मध्य तमाम राजनीतिक, राजनयिक, व्यापारिक तथा अकादमिक संबंधों का अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि वे सभी अंतर्राष्ट्रीय संबंध की विषय-वस्तु हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध की परिधि में विभिन्न प्रकार के समूह, जैसे राष्ट्र, राज्य, सरकारें, जातियां, क्षेत्र, परिसंघ, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, औद्योगिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक संगठन आदि भी शामिल हैं।

पाल्मर एवं पार्किन्स जैसे विद्वान् अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को विद्या के रूप में मान्यता प्रदान नहीं करते। इनका मत है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंध इतिहास और राजनीतिक विज्ञान की विधाओं से जन्मा है।

प्रो. अल्फ्रेड जिमनमैन के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्पष्ट रूप से ही सामान्य अर्थ में एक विषय नहीं है। क्योंकि इसके पास पठन-सामग्री का एक भी सूत्रबद्ध संकलन नहीं है। यह केवल विभिन्न विषयों जैसे विधि, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान इत्यादि का संकलन मात्र है। द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् अनेक विद्वानों ने ये विचार प्रकट किए हैं कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के संबंध में विश्लेषणात्मक विचार करना संभव हो गया है।

हार्टमैन अंतर्राष्ट्रीय संबंध को अध्ययन के ऐसे विषय के रूप में परिभाषित करते हैं, जो उन प्रक्रियाओं जिनसे राज्य अपने राष्ट्रीय हितों का सामंजस्य दूसरे राज्यों के साथ स्थापित करते हैं, पर ध्यान देता है। अतः अंतर्राष्ट्रीय संबंध राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देने का साधन हैं।

2 / NEERAJ : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

प्रश्न 2. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बदलते स्वरूप के विषय में संक्षिप्त वर्णन कीजिए ।

उत्तर-अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का बदलता स्वरूप-द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के स्वरूप एवं संदर्भ में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। पारंपरिक रूप से विश्व राजनीति के केन्द्र में यूरोप था और देशों के बीच संबंधों का संचालन विदेश विभाग के अधिकारियों द्वारा गुप्तचर तंत्रों से किया जाता था।

किन्तु वर्तमान युग जेट युग है, जिसमें राज्य एवं सरकार के प्रमुख तथा विदेश मंत्री पूरी दुनियां की यात्रा करते हुए अपने निजी संपर्क कायम करते हैं तथा अन्तर्राष्ट्रीय संबंध के कार्य-व्यापार का संचालन करते हैं। आज एक देश से दूसरे देश में कुछ ही घंटों में पहुँचा जा सकता है। टेलीफोन, फैक्स मशीनों, टेलीप्रिंटर तथा अन्य आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मदद से प्रत्येक देश के संचालक एक-दूसरे के निजी सम्पर्क में आ गए हैं।

औपनिवेशीकरण के समाप्त होने से कई स्वतंत्र तथा संप्रभु राज्यों का उदय हुआ है, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ तक कि कई अति छोटे देशों के पास भी भले ही ताकत न हो, किन्तु उन्हें आज भी आम सभा में अपनी बात रखने का सम्पूर्ण तथा समान अधिकार प्राप्त है। आज संयुक्त राज्य के सदस्यों की संख्या भी बढ़कर 185 हो गई है। आज अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों का संचालन अनेक नए राष्ट्र-राज्यों, द्वारा होता है। इनके अतिरिक्त कई और राज्यीय ताकतें; जैसे बहुराष्ट्रीय निगम तथा बहुदेशीय निकाय अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं।

प्रश्न 3. समसामयिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विषय-क्षेत्र का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर-विधि व राजनयिक इतिहास के अध्ययन के साथ आरम्भ हुए अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषय-क्षेत्र वर्तमान युग में काफी विस्तृत हो चुका है।

- आज राष्ट्रों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध जटिल हो गए हैं। परिणामस्वरूप विद्वानों का ध्यान अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं संस्थाओं से क्षेत्र विशेष तथा विदेश नीति के राजनीतिक पहलुओं के अध्ययन की ओर आकृष्ट हुआ है।
- युद्ध के दौरान संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना से राष्ट्रों के बीच संबंधों के पुननिर्माण की दिशा में बेहतर सोच की स्थापना हुई है।
- शीतयुद्ध के दौरान विचारधारा एवं निःशस्त्रीकरण जैसे विचारों को अभूतपूर्व महत्ता हासिल हुई है।
- गठबंधन और क्षेत्रवाद भी अब अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के महत्त्वपूर्ण अंग बन गए हैं।
- समसामयिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अंतर्गत राजनयिक इतिहास, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति, अंतर्राष्ट्रीय संगठन, अंतर्राष्ट्रीय विधि एवं क्षेत्रवार अध्ययन के तमाम आयामों का अध्ययन शामिल है।
- हालांकि आज भी इसके केन्द्रबिन्दु राष्ट्र-राज्य व्यवस्था व अंतर्राष्ट्रीय संबंध हैं, किन्तु अनेक संगठनों व समूहों के क्रियाकलापों व अंतःक्रियाओं को भी शामिल करना आवश्यक हो गया है।
- बीसवीं सदी में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का विषयक्षेत्र काफी व्यापक हो गया है। राज्यों के मध्य पारस्परिक निर्भरता इतनी बढ़ गई है कि समस्त संसार एक विशाल ग्राम में बदल गया है।
- राज्यों के आर्थिक संबंध, अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं; जैसे विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष तथा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन की भूमिका आज पूरी दुनियां की आर्थिक गतिविधि को प्रभावित करते हैं।
- वर्तमान समय में मानवीय अस्तित्व के लिए अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद का खतरा विश्व के लिए सबसे बड़ी चुनौती बन गया है।
- बहुराष्ट्रीय निगम जो कि वास्तव में दुनियाभर में व्यापार करने वाली बड़ी कम्पनियां हैं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले और राज्यीय तत्त्व के रूप में उभरे हैं।

अतः आज के दौर में अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की परीधि काफी व्यापक हो गई है।

प्रश्न 4. अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन के यथार्थवादी, आदर्शवादी तथा नवयथार्थवादी दृष्टिकोण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

उत्तर-अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का यथार्थवादी दृष्टिकोण-अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के पारंपरिक दृष्टिकोण की प्रमुख प्रणालियां हैं-यथार्थवाद, आदर्शवाद तथा नवयथार्थवाद। यथार्थवादियों का मत है कि सत्ता के लिए संघर्ष ही समस्त अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का केन्द्रीय तत्त्व है। उनका यह मानना है कि राष्ट्रों के मध्य वैमनस्य और द्वंद्व, किसी न किसी रूप में सदैव मौजूद रहते हैं। जिस प्रकार निजी हित वैयक्तिक आचरण को संचालित करता है, उसी प्रकार राष्ट्रीय हित राष्ट्र-राज्यों की विदेश नीति को संचालित करता है। निरंतर द्वंद्व अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की वास्तविकता

है और यही द्वंद्व सीधा सत्ता-संघर्ष का परिणाम है। यथार्थवादियों के लिए राष्ट्रीय हित ही एकमात्र लक्ष्य है, जिसे वे हर कीमत पर बढ़ावा देना चाहते हैं। अतः यथार्थवादियों के लिए राष्ट्रों के मध्य सत्ता वितरण की व्याख्या करना ही अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एकमात्र काम है।

आदर्शवादी यह मानते हैं कि मानव-मन की मौलिक अच्छाई की अन्ततः विजय होती तथा एक ऐसी व्यवस्था प्रकट होगी जिसमें न तो युद्ध होगा, न असमानता होगी तथा न ही किसी प्रकार का अत्याचार होगा। यह नई विश्व व्यवस्था विवेक, शिक्षा और विज्ञान के प्रयोग से ही संभव होगी। आदर्शवादी भावी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करते हैं जिसमें न राजनीति है, न हिंसा तथा न ही अनैतिकता। उनका पूर्ण विश्वास है कि अन्त में एक ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन पैदा होगा, जिसे सभी राष्ट्र-राज्यों का आदर प्राप्त होगा तथा वही संगठन सम्पूर्ण विश्व को द्वंद्व और युद्ध से मुक्ति प्रदान करेगा।

नवयथार्थवाद अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन की वर्तमान प्रणालियों में से एक है। इनका यह मत है कि 'जिसकी लाठी, उसकी बैस' का सिद्धान्त मौलिक रूप से हॉब्सवादी है। बड़ी ताकतें सदैव वैमनस्थ की भावना से ग्रस्त रहती हैं तथा संरचना के स्तर पर आमतौर पर अराजकता बनी रहती है। संरचना एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके अंतर्गत एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। मौजूदा अराजक व्यवस्था में हम पाते हैं कि एक शक्तिशाली राष्ट्र की रुचि दूसरे राष्ट्रों को अपेक्षित सामर्थ्य प्राप्त करने से रोकने में होती है।

इनका यह भी मानना है कि राष्ट्र-राज्य आज भी अंतर्राष्ट्रीय समिति में मुख्य भूमिका निभाते हैं तथा इनका यह विचार है कि आज अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की पहचान अराजकता व बहुकेन्द्रक गतिविधियों के रूप में की जा सकती है तथा इन गतिविधियों का स्रोत अब मात्र राज्य ही नहीं, अपितु गैर-राज्य तत्त्व भी है। अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद, धार्मिक युद्ध, गृहयुद्ध की बढ़ती घटनाएं और प्रतियोगी बहुराष्ट्रीय निगमों के कारण यह जटिलता और भी जटिलतर हो गई है।

अतः नवयथार्थवाद इस अराजक विश्व में सत्ता-संघर्ष के तत्त्व पर विशेष बल देता है। सत्ता-संघर्ष केवल राज्यों के बीच ही नहीं, अपितु उनमें से प्रत्येक के अन्दर भी है।

प्रश्न 5. काप्लान द्वारा स्थापित किए गए प्रणाली सिद्धान्त के मॉडलों की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए।

उत्तर-प्रो. मोर्टन काप्लान अंतर्राष्ट्रीय संबंध में प्रणाली सिद्धान्तकार के रूप में काफी प्रभावी माने जाते हैं। उन्होंने प्रणाली सिद्धान्त के छः मॉडलों की रचना की है। ये मॉडल निम्नलिखित हैं-

- (i) सत्ता-संतुलन प्रणाली।
- (ii) शिथिल द्विध्रुवीय प्रणाली।
- (iii) दृढ़ द्विध्रुवीय प्रणाली।
- (iv) सार्वभौम नियोक्ता प्रणाली।
- (v) शृंखलाबद्ध प्रणाली।
- (vi) एकल वीटो प्रणाली।

(i) सत्ता-संतुलन प्रणाली-यह प्रणाली यूरोप में 18वीं तथा 19वीं सदी में प्रचलित थी। इस प्रणाली के अंतर्गत कुछ शक्तिशाली देश अकेले या दूसरे देश के साथ मिलकर सत्ता-संतुलन कायम करने का प्रयत्न करते हैं।

(ii) शिथिल द्विध्रुवीय प्रणाली-यह प्रणाली शीत-युद्ध के दौरान प्रचलित थी। विश्व राजनीति के नक्शे में द्विध्रुवीय विभाजन के बावजूद कुछ देशों से किसी भी एक सत्ता केन्द्र के साथ गठबंधन बनाना अस्वीकार कर दिया था।

(iii) दृढ़ द्विध्रुवीय प्रणाली-जब गुटनिरपेक्ष देश किसी एक सत्ता केन्द्र के साथ गठबंधन स्थापित करते हैं, तब दृढ़ द्विध्रुवीय प्रणाली का जन्म होता है।

(iv) सार्वभौम नियोक्ता प्रणाली-इस प्रणाली के अन्तर्गत कोई अंतर्राष्ट्रीय संगठन जिसे सभी देशों की निष्ठा प्राप्त होती है, सत्ता का केन्द्र बन जाता है। लगभग सभी देश सार्वभौम नियोक्ता, जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हैं। किन्तु, ऐसा करने के लिए उन्हें अपनी संप्रभुता को दांव पर नहीं लगाना होता है। इससे विश्व सरकार का मार्ग प्रशस्त होगा।

(v) शृंखलाबद्ध अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली-यह एकल ध्रुवीय विश्व-प्रणाली भी कहलाती है, जिसके अंतर्गत एक देश इतना अधिक शक्तिशाली हो जाता है कि दूसरे देश उसके निर्देशों के अनुसार संचालित होने लगेंगे।

4 / NEERAJ : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध

(iv) एकल बीटो प्रणाली—चूँकि प्रत्येक देश के पास परमाणु हथियार होंगे, इसलिए प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का दुश्मन होगा तथा स्वयं को सर्वशक्तिमान घोषित करने के लिए दूसरे राष्ट्र को समाप्त करने की योजना बनाएगा।

उपर्युक्त वर्णित मॉडलों के अतिरिक्त भी काफ़्लान तथा अन्य विद्वानों ने तीन अन्य मॉडलों की रचना की है—

- (1) बहुकेन्द्रक मॉडल,
- (2) राष्ट्रीय-विखंडन अथवा बहुध्रुवीय मॉडल।
- (3) उत्तर-परमाणु युद्ध मॉडल।

(1) बहुकेन्द्रक मॉडल—इस मॉडल के अंतर्गत विश्व को 5-7 विशिष्ट प्रभाव क्षेत्रों में बांटा जाता है। इनमें से प्रत्येक क्षेत्र को एक-एक महाशक्ति के नियंत्रण में माना गया है।

(2) राष्ट्रीय-विखंडन मॉडल—यह राजनीतिक और भूखंडीय विभाजन का परिणाम होगा। अनेक अलगाववादी अथवा जातीय आंदोलनों के परिणामस्वरूप विशाल राज्यों का विभाजन अनेक छोटे-छोटे राज्यों में हो जाएगा।

(3) उत्तर-परमाणु युद्ध मॉडल—यह प्रलयकारी परमाणु युद्ध के बाद की दुनियां होगी। परमाणु युद्ध के परिणामस्वरूप जो राज्य सबसे अधिक निरंकुश होगा वही रोटी, कपड़ा और मकान इत्यादि का सही वितरण कायम रख सकेगा। इस स्थिति से बचने के लिए एक नई विश्व प्रणाली की स्थापना करनी होगी।



Neeraj

Publications
www.neerajbooks.com